647510 **BRS3HINF0312** **Seat No :_____**

B.R.S. Semester - 3 (*CBCS*) Examination
Oct/Nov. -2019 (Old Course)
HINDI (FOUNDATION - 5)

Time: 2:30 Hours **Marks: 70**

Instructions:

1. All questions are compulsory.
2. Figures to the right indicate marks.

प्रश्न-१ "प्रतिशोध" एकांकी की कथावस्तु लिखकर उसमे व्यक्त संदेश लिखे। (१५)

अथवा

प्रश्न-१ "पर्दे के पीछे" एकांकी में व्यक्त भष्ट्राचार की समस्या का आलेखन कीजिए।

प्रश्न-२ "स्ट्राईक एकांकी की कथावस्तु लिखकर दाम्पत्यजीवन की विषमता का चित्रण कीजिए। (१५)

अथवा

प्रश्न-२ "रीठ की हड्डी" सामाजिक विषमता को चित्रित करने वाला एकांकी है। - कथावस्तु लिखकर साबित कीजिए।

प्रश्न-३ निम्नांकित में से किन्ही तीन संदर्भो की सविस्तार व्याख्या कीजिए। (१५)

(1) हाँ. मैंने बी.ए पास किया है, कोई पाप नहीं किया, कोई चोरी नहीं की, परंतु आप के लाडले बेटे की रीढ़ की हड्डी है या नहीं, जांच कीजिए - । - इस संदर्भ को समजाईए।

(2) मनुष्यों के लिए वो लोगों ने अस्पताल खोल ही रखे है। इन बेचारें मूंगे पशु-पक्षियों का क्या? – इस संदर्भ को समजाईए।

(3) आप मेरे घर आना चाहती हो वो, शारदा को पूछना पडेगा – घर से मतलब है शारदा – मैं कुछ नही हुं शिलाजी, जो कुछ है शारदा ही है,। - इस संदर्भ को समजाईए।

(4) ये – है कोंग्रेस के लोग जो मेरे समान ही स्वार्थी और अर्थ लोलूप है। इनके भी वैसे ही मकान, कोठी, महल, नौकर – चाकर है फिर यह मजाल कि काम कुछ भी नहीं करतें, व्यापार कोई नही करते तो क्या रुपया आकाश से तूट पडता है।?

(5) अनुशासन की मर्यादा पर बडे-से बड़े व्यक्ति का बलिदान किया जा सकता है।

प्रश्न-४ "प्रतिशोध" एकांकी में से श्रीधर की चारित्रिक विशेषताएँ बताईए। (१५)

अथवा

प्रश्न-४ रीढ़ की हड्डी में से पात्र गोपालप्रसाद की चारित्रिक विशेषताएँ बताईए।

प्रश्न-५ निम्नांकित प्रश्नो के सूचनानुसार उत्तर लिखे। (१०)

रविप्रकाशन, राजकोट से SYBRS की हिंदी की किताबे मंगवाने का पत्र तैयार कीजिए।

अथवा

प्रश्न-५ निम्नांकित परिच्छेद का हिंदी भाषामें ही सारलेखन कीजिए।

भारत का पर्वतीय सौंदर्य अलौकिक है। उत्तर दिशामें दूर – दूर तक पर्वत श्रृंखलाएं फैली हुई है। उनकी गगनचुम्बी चोंटियों पर बादल मंडराते रहते है तथा बर्फ गिरती रहती है। विविध मौसम गर्मी, शरदी, वर्षा एक ही साथ चलते रहते है। झरझर झरने प्रवाहित होते रहते है। नदियों के उद्गम स्त्रोंतो की कल – कल ध्वनि गुंजती रहती है। विभिन्न जडी – बुटियाँ इस क्षेत्र में उपलब्ध है। अनेक जीव – जन्तुं इस पर निवास करते है ऋषि – मुनि वहीं पर एकांत साधना में मग्न रहते है। इधर उधर उगी हुई धास तथा देवदास आदि के लम्बे – लम्बे वृक्ष – इस प्रदेश में हरीत्तिमा व्याप्त करते है। प्रात: एवं सायंकाल सूर्य, पर्वत, श्रृंगो पर स्वर्णिम गुलाबी, लाल, रंग, विकीर्ण कर प्रकृति सुंदरी को सजाता है। रात्रि में चंद्रमा अपनी शुभ, शीतल तथा मनोहारिणी चांदनी से – प्रकृति नारी – के तन को श्रृंगारित करता है। ओस की बुंदे उसे विविध अलंकार पहनाती है। यह सब देखकर एसा लगता है – मानो इस रुपमें इश्वरने अपनी सुरुचि का परिचय दिया है।

****